सत्यमेव जयते

अनुराग त्रिपाठी, भा.रे.का.से.
सचिव
Anurag Tripathi, IRPS
Secretary

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड
(मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन एक स्वायत संगठन)
शिक्षा केन्द्र, 2, समुदायिक केन्द्र, प्रीत विहार, दिल्ली – 110092
CENTRAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION
(An Autonomous Organisation under the Ministry of Human Resource Development, Govt. Of India)
Shiksha Kendra, 2, Community Centre, Preet Vihar, Delhi - 110092
फोन / Telephone: +91-11-22549627-28, फैक्स / Fax +91-11-22459735
वेबसाइट / Website: www.cbse.nic.in ई–मेल / E-mail: secy-cbse@nic.in

दिनांक: सितम्बर 05, 2020

प्रिय शिक्षक,

शिक्षक दिवस के इस पावन पर्व पर आप सब को मेरा सादर नमस्कार एवं हार्दिक शुभकामनाएं।

शिक्षक भगवान का रूप होते हैं। वह मां की तरह बच्चों से बेपनाह प्यार करते हैं। वह पिता की तरह उनकी अंगुली पकड़कर उन्हें चलना सिखाते हैं। एक दोस्त की तरह जीवन के हर मोड़ पर मुस्कुराते हुए खड़े रहते हैं । बागवान के माली की तरह उन्हें पुष्पित और पल्लवित करते हैं। एक मूर्तिकार की तरह उनमें खूबसूरत इंसान की प्राण प्रतिष्ठा करते हैं। जीवन की हर परिस्थिति का सामना करने के लिए उन्हें सोने सा तपाते हैं। उनकी आँखों में सतरंगी सपने बुनते हैं। उनकी भुजाओं में बल भरते हैं। उनमे संकल्प-शक्ति की स्थापना करते हैं।उन्हें इंस्पायर करते हैं। उनकी हर छोटी-बड़ी उपलब्धि पर उनके उत्साह को दूना करते हैं। नित नए ज्ञान का सृजन करने के लिए उन्हें व्याकुल बनाते हैं।

प्रिय शिक्षक,

आप माँ-बाप की तरह बच्चों को जन्म तो नहीं देते लेकिन इस जन्म को हज़ार जन्मों से बेहतर बनाने की कला अवश्य सिखा जाते हैं । सचमुच आप भगवान का रूप होते हैं।

आप स्वस्थ, सुखी, संपन्न एवं ऊर्जा से भरपूर रहें इन्हीं शुभकामनाओं के साथ आपका

Anurag Tripathi

अनुराग त्रिपाठी

अनुराग त्रिपाठी
आई.आर.पी.एस.
सचिव, सीबीएसई

शिक्षक कौन ?

(शिक्षकों को समर्पित)

बच्चे प्रकृति की सबसे अद्भुत देन होते हैं। उनका जन्म मात्र ही पूरे परिवार में खुशियों की बरसात कर देता है। उठते, जागते, सोते और मुस्कराते हर पल माँ का प्यार उन पर बरसता रहता है। माँ की छाँव तले ही वह चलना, बोलना, समझना और बाहरी दुनिया से व्यवहार करना सीखते हैं। एक दिन ऐसा आता है जब माँ उसे नहला-धुलाकर, कपड़े पहनाकर, टिफिन और बस्ते के साथ स्कूल जाने को तैयार करती है। वह रोता, बिलखता और बार-बार पीछे मुड़कर माँ को देखते हुए स्कूल की देहरी पर प्रवेश करता है। मुसकुराते टीचर, रंगीन दीवारें, करीने से सजे फ़र्नीचर, झूलों पर लटकते बच्चे और हरे-भरे खेल के मैदान उसका स्वागत करते हैं। डबडबाई आँखों से वह सब कुछ निहारता है। स्कूल के हर कोने में अपनी माँ को तलाशता है। अचानक एक टीचर उसका हाथ पकड़ती है और धीरे-धीरे सीढ़ियां चढ़ते हुए एक कक्ष में दाखिल हो जाती है। वहां उसके ही जैसे ढेरों बच्चे एक दूसरे को निहार रहे थे।

बड़े प्यार से टीचर उनकी तरफ मुखातिब होती है। मीठी एवं सुरीली आवाज में बच्चों से बातचीत शुरू करती है। नाम पूछती है, कहानियां सुनाती है और गाने गुनगुनाते हुए उस छोटे से कमरे को डांस फ्लोर में तब्दील कर देती है । कुछ ही देर में बच्चों का रोना हंसी की खनखनाहट से भर जाता है । सबकी टिफिन खोलती है, थोड़ा-थोड़ा शेयर करती है और एक दूसरे का हाथ पकड़कर गेम्स रूम की तरफ मुखातिब हो जाती है । और इस तरह बच्चों की नन्हीं सी दुनिया धीरे-धीरे सीखने के संसार में प्रवेश कर जाती है ।

बचपन कच्ची मिट्टी के घड़े की तरह होता है । अध्यापक के सधे हुए हाथ उसे किसी भी कलेवर में बदल सकते हैं। जैसे एक मूर्तिकार अपने हाथों से पत्थर को भगवान बना देता है वैसे ही एक अध्यापक नन्हें-नन्हें बच्चों को खूबसूरत इंसान बना देता है । जैसे एक माली खाद, पानी और प्रकाश देकर नन्हें से बीज को फलदार वृक्ष बना देता है वैसे ही एक अध्यापक सीखने लायक वातावरण देकर बच्चों में असीमित संभावनाओं के द्वार खोल देता है ।

शिक्षक एक मां की तरह अपने बच्चों से “प्यार” करता है । उनके दुख-दर्द को समझता है । उन्हें भावनात्मक सपोर्ट देता है । संवेदनशीलता एवं धैर्य के साथ उनकी हर बात सुनता है । उनकी हर समस्या का समाधान देता है । उन्हें हर क्षण प्रेरित करता है । उनकी पीठ ठोंकता है । उनके कंधे पर हाथ रखता है । शाबाशी के बोल बोलता है । भीतर की चिनगारी को आग देता है ।

एक अच्छा टीचर छात्रों को “ग़लतियाँ करने के लिए प्रेरित” करता है । उनकी गलतियों को माफ करता है। उन्हें कभी हतोत्साहित नहीं करता । उनकी कभी तुलना नहीं करता । उन्हें कभी बुरा नहीं बोलता । सलाह भी अकेले में देता है । एक अच्छा टीचर अपने छात्रों से एक ऐसा दिली रिश्ता क़ायम करता है जिसमें बच्चे ना सिर्फ खुद को सुरक्षित महसूस करते हैं वरन अपनी हर बात उससे शेयर करने को तैयार भी रहते हैं । यह रिश्ता विश्वास का रिश्ता होता है ।यह रिश्ता भरोसे का रिश्ता होता है । एक बार शिक्षक और छात्र के बीच यह रिश्ता क़ायम हो जाए तो सीखने-सिखाने की प्रक्रिया अनवरत चलने लगती है । किताबी बातें संस्कार में ढलने लगती हैं ।

एक अच्छा शिक्षक “सीखने योग्य वातावरण” का निर्माण करता है । घर और स्कूल के अंतर को पाटता है । बच्चों को सोचने और करने की पूरी आज़ादी देता है । उनके मन से टीचर का भय निकालता है । उन्हें अपना दोस्त बनाता है । बच्चे उससे प्रश्न पूछते हुए हिचकिचाते नहीं । ग़लतियाँ करते हुए डरते नहीं । रचनाएँ दिखाते हुए शर्माते नहीं। पूरा माहौल इतना ज्वॉयफुल होता है कि बच्चे खेल खेल में अनुसंधान और नए ज्ञान का सृजन करने लगते हैं।

एक अच्छा शिक्षक बच्चों के मन में "सीखने के प्रति अभिरुचि" जगाता है । वह अपने छात्रों की सीखने की क्षमता का आकलन करता है । विद्यार्थियों की रुचि एवं क्षमतानुसार उन्हें अलग-अलग ढंग से सिखाने का प्रयास करता है । कक्षा के सभी छात्रों में सीखने की क्षमता एक जैसी नहीं होती । कुछ धीमी गति से सीखते हैं तो कुछ तीव्र।कुछ पढ़ कर सीखते हैं तो कुछ देखकर । कुछ गाकर सीखते हैं तो कुछ याद कर । कुछ अनुभव के माध्यम से सीखते हैं तो कुछ प्रयोग करके । कुछ एकांत में सीखते हैं तो कुछ सबके साथ । इस प्रकार एक अच्छा शिक्षक अपनी कक्षा के सभी विद्यार्थियों का ध्यान रखते हुए उन्हें विविध तरीकों से सिखाता है ।

एक अच्छा शिक्षक अपने बच्चों को "जीवन कौशलों" (लाइफ स्किल्स) से लैस करता है ।उन्हें जिंदगी की चुनौतियों से रूबरू कराता है । उन्हें क्रोध, चिंता, तनाव, डिप्रेशन एवं उलझते रिश्तों को सुलझाने एवं मुक्ति पाने का मार्ग दिखाता है । उन्हें निर्णय लेने, पहल करने, विश्लेषण करने, समस्या का समाधान करने, रचनात्मक सोच रखने, आविष्कार करने, सहयोग करने, नेतृत्व करने एवं सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन जीने की कला सिखाता है । यह सीख अलग से नहीं दी जाती वरन मुख्य विषयों के साथ साथ गुँथी रहती है । भाषा पढ़ते पढ़ते कब बच्चे में रचनात्मकता, संवेदनशीलता, संप्रेषण प्रियता, नेतृत्व कला, पर्यावरण प्रेम एवं सामाजिक-सांस्कृतिक बोध पैदा हो गया पता ही नहीं चलता ।

विज्ञान और गणित की कक्षाओं में कब वैज्ञानिक सोच, विश्लेषणात्मक बुद्धि, तार्किक क्षमता, समस्या समाधान, खोजी प्रवृत्ति, आविष्कार एवं रचनाशीलता का जन्म हो गया, पता ही नहीं चलता । क्लासरूम चर्चा, समूह-चर्चा, ब्रेन स्टार्मिंग, रोल प्ले, केस स्टडीज, थिएटर, डांस, ड्रामा, स्टोरी, आर्ट, म्यूजिक एवं अन्य गतिविधियों के माध्यम से बच्चों में लाइफ स्किल्स का स्वाभाविक विकास होता है ।

एक अच्छा शिक्षक अपने छात्रों में "मूल्यों एवं संस्कारों" के बीज बोता है । बचपन इसका सबसे सही समय होता है । इस समय आत्मा पूर्ण प्रकाशित रहती है । मन कोरी स्लेट की तरह होता है । बुद्धि के विमर्श शांत रहते हैं । काम, क्रोध, लोभ, मोह के विकार नदारत रहते हैं । इस समय डाले गये मूल्य स्थायी रूप से अंकित हो जाते हैं । इस समय सिखाई गई आदतें बच्चों के आचरण में उतर जाती हैं । अहिंसा, सत्य, दया, करुणा, न्याय, प्रेम, ईमानदारी, और शांति के पाठ बच्चों के चरित्र में ढल जाते हैं । ये मूल्य एवं संस्कार कक्षाओं में पढ़ाने से नहीं आते । माँ- बाप, समाज और शिक्षकों का "आचरण" खुद बख़ुद बच्चों में उतरता जाता है । शिक्षक जिन मूल्यों को बच्चों में देना चाहता है वह स्वयं उसमें भी व्यक्त होने चाहिए । बच्चे उसमें अपनी छवि ढूंढ़ते हैं। उसकी हर छोटी-बड़ी गतिविधि का अनुसरण करते हैं। उसके चरित्र, उसकी जीवनशैली एवं उसके व्यवहार को अपने जीवन में उतारते हैं।

एक शिक्षक अपने “विषय का मास्टर” होता है । वह अपने "विषय का वृहद ज्ञान" अर्जित करता है । वह दिन-रात अपनी प्रतिभा को तराशता रहता है । वह लगातार सीखने के लिए लालायित रहता है । देश और दुनिया में हो रहे शैक्षिक नवाचारों के प्रति सचेत रहता है । अनुसंधान एवं प्रयोग द्वारा अपने ज्ञान को नयी धार देता है । विश्वस्तरीय पुस्तकें, लेखकों, विद्वानों, शोधपत्रों एवं शीर्षकों का गहन अध्ययन करता है । उस ज्ञान को अपने आचरण में उतारता है । उनका व्यावहारिक जीवन में उपयोग करता है । विभिन्न गतिविधियों एवं कलाओं के माध्यम से उस ज्ञान को वह व अपने छात्रों के आचरण में भी उतारता है ।

शिक्षक जितना महान होता है उसका “संप्रेषण” भी उतना ही प्रभावशाली होता है । उसकी उच्च संप्रेषण क्षमता बच्चों के ज्ञान को सीख में बदल देती है। वह बच्चों को सिखाने की नयी-नयी तकनीकें ईजाद करता है। उसकी कक्षाएं कभी नीरस, उबाऊ, और बोरियत से भरी नहीं होती । उसका आगमन मात्र बच्चों को उल्लास से भर देता है । उसका हास्य-विनोद, गंभीर वातावरण को हल्का कर देता है । उसकी बुलंद आवाज़ क्लास-रूम को थिएटर में तब्दील कर देती है। उसकी संवाद- कला कक्षा के माहौल को जीवंत कर देती है। उसके पढ़ाने का नाटकीय अंदाज बच्चों को विषय से बांध देता है।

एक कहानीकार की तरह वह ज्ञान की परत-दर-परत खोलता जाता है और बच्चे उसको अनुभवात्मक तरीके से ग्रहण करते जाते हैं । सीखने की पूरी प्रक्रिया में बच्चे बराबर के भागीदार होते हैं । एक महान शिक्षक पढ़ाता नहीं वरन् सिखाता है । वह गणित, विज्ञान एवं समाज विज्ञान के सिद्धांतों को रटाता नहीं वरन उनका व्यावहारिक जीवन में उपयोग सिखाता है । वह विभिन्न विषयों के अंतरसंबंधों को उजागर करता है । तमाम गतिविधियों के माध्यम से क्लास को ज्वॉयफुल बनाता है ।

एक अच्छा शिक्षक अपना और अपने छात्रों का “सतत मूल्यांकन” भी करता रहता है । वह आत्मविश्लेषण, आत्ममूल्यांकन, आब्जर्वेशन, फ़ीडबैक एवं परीक्षा परिणाम के आधार पर पढ़ाए गए पाठ की गुणवत्ता परखता है। "लर्निंग आउटकम" द्वारा जाँच करता है कि शिक्षा का उद्देश्य पूरा हुआ या नही । बच्चों में लिखने, पढ़ने, समझने और बोलने की क्षमता विकसित हुई या नही।

एक अच्छा शिक्षक "लर्निंग आउटकम" के सारे पैरामीटर्स का गहन अध्ययन करता है । क्या सिखाना है, इसका पूरा आकलन करता है । पढ़ाने से पहले लक्ष्य निर्धारित करता है । पढ़ाते समय "एक्सपीरिएंशियल लर्निंग" का प्रयोग करता है एवं पढ़ाने के बाद आब्जर्वेशन, असाइनमेंट्स, रोल प्ले, टेस्ट, प्रश्नोत्तरी आदि के माध्यम से "लर्निंग आउटकम" का आकलन करता है । आवश्यकता पड़ने पर बच्चों को दुबारा सिखाता है ।

आइए एक बार आत्मावलोकन करते हैं । खुद से प्रश्न पूछते हैं कि क्या हम श्रेष्ठ शिक्षक हैं ? क्या हम अपने पेशे से प्यार करते हैं ? क्या हमारे भीतर वे गुण हैं जिनकी अपेक्षा हम बच्चों से करते हैं ? क्या हमारा आचरण अनुकरणीय है ? क्या हम लगातार अपनी क्षमता को तराशते रहे हैं ? क्या हम जोश से भरे, योग्य, प्रशिक्षित, प्रेरित एवं जुनूनी शिक्षकों की फ़ौज का प्रतिनिधित्व करते हैं?

यह यक्ष प्रश्न 30 करोड़ छात्रों के भविष्य से जुड़ा हुआ है । करोड़ों देशवासियों के सपनों से जुड़ा हुआ है । उम्मीदें पहाड़ जैसी हैं । फिर भी मुझे मालूम है कि आप हिमालय चढ़ सकते हैं । एवरेस्ट फ़तह कर सकते हैं । भर्ती, तरक्की, प्रशिक्षण, कैरियर एवं इंफ़्रास्ट्रक्चर की समस्याओं को दरकिनार करते हुए करोड़ों ग़रीबों एवं वंचितों के मन में ज्ञान की ज्योत जगा सकते हैं ।

क्योंकि आप शिक्षक हैं ।

- अनुराग त्रिपाठी
आई.आर.पी.एस.
सचिव, सीबीएसई